Since March 2002
A National, Registered & Refereed Monthly Journal : Exclusive : Samprati
Research Link - 173, Vol - XVII (6), August - 2018, Page No. 1-2
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

एक संवेदनशील संत - स्वामी प्रबुद्धानंदजी सरस्वती से भेंट

स्वामी श्री प्रबुद्धानंदजी सरस्वतीजी के पिताजी से पूछा कि क्या स्वामीजी का विद्यार्थी जीवन से ही आध्यात्मिकता की ओर झुकाव था? या आपको आभास और अनुभव हो रहा था कि सन्यास का यह चुनौतीपूर्ण मार्ग चुनेंगे? उन्होंने उत्तर दिया - नहीं। ऐसा कुछ भी नहीं था। मैंने ही उन्हें इस ओर प्रेरित किया। प्रतापगढ़ यूपी के हमारे सरयूपारी ब्राह्मण परिवार में आध्यात्मिक वातावरण था। मेरे पिताजी श्री यज्ञनारायणजी रेल्वे अधिकारी होने के साथ ही ज्योतिष के अच्छे जानकार थे। मैं मिशन की गतिविधियों से जुड़ा था। आशीष (स्वामी जी) के इस निर्णय में श्री रामकिंकर जी के प्रवचनों का विशेष योगदान रहा। लखनऊ के मोतीमहल लॉन में रामकिंकरजी को सुनने जाते समय वे साथ में आशीष को भी ले जाते थे। एक दिन पिताजी ने कहा - 'वेद-वेदान्त का अध्ययन करो, तुम जो भी काम करोगे, उसमें यह ज्ञान काम आएगा।' तब तक बी.ए. का रिजल्ट भी नहीं आया था और आशीष ने 18 नवम्बर 1998 को चिन्मय मिशन में ब्रह्मचारी का तीन साल का कोर्स जॉइन कर लिया। सिद्धबाड़ी, हिमाचल प्रदेश में स्वामी सुबोधानंदजी और स्वामी अद्वैतानंदजी ने शिक्षा दी। 8 मई 2001 को स्वामी तेजोमयानंदजी ने ब्रह्मचारी दीक्षा दी, जो उस समय चिन्मय मिशन के विश्वप्रमुख थे और उन्हें केशवचैतन्य नाम मिला। कोर्स पूरा होने पर 1 महीने की छुट्टी मिली और साथ ही इन्दौर आश्रम में पोस्टिंग। मिशन की तरफ से कोई बंधन नहीं था। छुट्टी पूरी होने पर उन्होंने अपना निर्णय सुनाया, 'इतने ज्ञान के बाद अब मुझे सांसारिक झंझटों में नहीं उलझना है' और वे इन्दौर आ गए।

डॉ.हेमलता दिखित

शनिवार 12 मई 2018 को चिन्मय आश्रम जाना हुआ। अपनी नई पुस्तक स्वामी जी को भेंट करनी थी। मैं अपनी हर किताब उन्हें भेंट करती आई हूँ। प्रणाम करने के बाद लम्बे अन्तराल से आने की माफी माँगी। ''इन दिनों लेखन में क्या चल रहा है ? उन्होंने पूछा और हमने 'अतीत की कतरनों से' उन्हें सादर भेंट की। उन्होंने स्वास्थ्य के बारे में पूछा। मैंने कहा, ''हम तो ठीक हैं महाराज, मगर प्रो महेश दुबे ठीक नहीं हैं। उन्हें पैरेलेटिक अटैक हुआ था। काफी रिकवरी हो गई है, फिर भी पूरी तरह फिट नहीं हैं। वे तत्काल बोले, ''मुझे उनसे मिलने जाना है।'' मैंने पूछा, ''कब चलना चाहेंगे महाराज ?'' वो बोले,''जितनी जल्दी हो सके। भले काम में देरी किसलिए ? कल इतवार है, मैं व्यस्त हूँ। सोमवार को रख लें। शाम को 7 बजे ठीक रहेगा।'' ''मैं उनसे तय करके सूचित करती हूँ महाराज।'' एक बज रहा था। मैंने इजाजत माँगी, ''आपके भोजन का समय हो रहा है''। वे बोले, ''नहीं अभी मुझे बॉम्बे हास्पिटल किसी को देखने जाना है''। शाम को मैंने महेश और उनकी पत्नी शैल से बात की। कोई संत अपनी तरफ से किसी भक्त की तबीयत पूछने आना चाहें, तो इससे ज्यादा खुशी और सौभाग्य की बात और क्या हो सकती है। वो दोनों बहुत प्रसन्न थे।

यहाँ यह बताना प्रासंगिक होगा कि जब ब्रम्हचारी कैशवचैतन्य जी अगस्त 2001 में चिन्मय आश्रम इन्दौर आये थे, तब मैं रिटायर हो गई थी और महेश होलकर कॉलेज इन्दौर में पढ़ा रहे थे। हम लोग उनके ज्ञान यज्ञों में नियमित रूप से जाते थे। पलासिया, चन्द्रलोक, बीमा नगर, साकेत और शाकुंतल में 'गीता' के कई अध्यायों, 'मानस' के कई पक्षों व अन्य शास्त्रों पर हम लोगों ने न केवल उन्हें सुना है, बल्कि खूब नोट्स भी लिए हैं। यह सन् 2002 से 2010 के बीच की बात है। तब उनके प्रवचन शहर के सभाग्रहों, मंदिरों बगीचों और भक्तों के घरों में आयोजित होते थे। मुझे याद है मैंने पहली रिपोर्टिंग उनके गायत्री मंदिर के ज्ञान यज्ञ की की थी। उसके बाद यह बात मेरी आदत में आ गई। प्रवचन के बाद मैं नोट बना कर 'नईदुनिया' की वरिष्ठ पत्रकार ज्योत्स्ना भोंडवे को भेजती थी और अगले दिन वह छप जाता था। उन सब रिपोर्टिंग्स की पेपर कटिंग्स मैंने दो फाइलों में लगा कर स्वामी जी को भेंट की है। महेश भी नोट्स बना कर स्वामी जी को भेंट करते थे। कहने का तात्पर्य यह है कि स्वामीजी को महेश की खूब अच्छे से याद है।

सोमवार 14 मई की शाम मैं स्वामी जी को लेकर महेश के घर महालक्ष्मी नगर पहुँची। 12 वर्ष के लम्बे अनुशासन के बाद, शिवरात्री,

115 श्रीनगर एक्सटेंशन, इन्दौर (मध्यप्रदेश)

20 फरवरी 2012 को स्वामी तेजोमयानंद जी द्वारा सन्यास दीक्षा के बाद ब्रम्हचारी कैशवचैतन्य जी स्वामी प्रबुद्धानंद जी बन गए हैं। पति–पत्नी दोनों गदगद थे। महेश न केवल अपने विषय के विद्धान हैं, बल्कि शिक्षा, साहित्य और अध्यात्म के भी अच्छे जानकार हैं। दोनों में इन विषयों पर चर्चा होती रही। हम श्रोता थे। शैल, स्वागत–सम्मान की व्यवस्था में लगी थीं। महेश ने अपनी गणित पर लिखी दो पुस्तकें भेंट की। अन्त में बीमारियों पर भी चर्चा हुई। एक बात स्वामी जी ने बहुत अच्छी कही, ''मैं नही मानता, क्योंकि मैंने एक खास रगं (गेरूआ/भगवा) के वस्त्र धारण कर लिए है इसलिए मै किसी बीमार को देखने अस्पताल या उसके घर नहीं जा सकता। मैं जाता हूँ।'' कहने की आवश्कता नहीं हम तीनों उनके विचार सुनकर कितने हर्षित थे। ऐसे संवेदनशील संत को साथ बिताया गया यह समय यादगार बन गया। स्वामी जी को आश्रम छोड़ कर मैं घर आ गई।

जल्दी ही एक दिन एक मैग्जीन देने आश्रम गई। इसमे हमारी अनुवादित एक कहानी (एटन चेकव की 'शर्त') छपी थी जिस पर हम स्वामीजी से चर्चा करना चाहते थे। पत्रिका रखकर हम चलने को हुए, कि वरांडे में बैठे एक बुजुर्ग सज्जन बोले, ''स्वामी जी को अभी बाहर आने में देर है''। हमने बताया आज हम केवल पत्रिका रखने आए हैं। उन्होंने कहा,''मैंने आपकी किताब थोड़ी पढ़ी है। उस दिन आप स्वामी जी दे गईं थीं। मैं उनका पिता हूँ।'' हमने उन्हें दो बार प्रणाम किया। ''देश को एक संत देने के लिए आप डबल वंदनीय हैं।'' मैं बैठ गई। थोड़ी बात की, फिर जल्दी मिलने आऊँगी, कह कर मैंने बिदा ली। सोमवार 11 जून को स्वामी जी से पूछा, ''हम आपके पिताजी से थोड़ी देर के लिए मिलने कब आ सकते हैं ?'' वे बोले, ''अधिक मास में शाम को 'महाभारत' का पाठ चल रहा है, आप कल सुबह 9–30 बजे आइए''। घर से चलते–चलते लगा मैं पिताजी से स्वामी जी के बचपन, अध्यात्मिक लगाव और मिशन में आने की बात पूछूँ। मैंने कागज–कलम रख लिए और नियत समय पर पहुँच गई। एम कॉम और अर्थशास्त्र में एम ए, स्वामी जी के पिताजी श्री राकेशचन्द्र मिश्र ने बताया कि उन्होंने 1973 से कुछ सालों तक कानपुर के पंडित पृथ्वीनाथ कॉलेज में पढ़ाया। फिर वे बैंक सेवा में आ गए और वहीं से सन् 2008 में रिटायर हुए। उनकी तीन संतानों में आशीष (स्वामी प्रबुद्धानंन जी) सबसे बड़े हैं। छोटा पुत्र अभिषेक ज्यूरिख, स्वीटझरलैण्ड में सॉफ्टवेयर इंजीनियर है और बेटी दीप्ती की शादी हो गई है।

पिताजी ने बताया आशीष का जन्म 22 अगस्त 1976 को लखनऊ में हुआ था। आरंभिक शिक्षा सरस्वती शिशु मंदिर में हुई और ग्रेज्युएशन लखनऊ विश्वविद्यालय से। उन्होंने कम्प्यूटर कोर्स भी किया है। विद्यार्थी जीवन में उन्हें अच्छे कपड़े, क्रिकेट और अंग्रेजी भाषा प्रिय थी। अंग्रेजी की गतिविधियों में इनाम भी जीते हैं और वे एक प्रशासनिक अधिकारी बनना चाहते थे। आज वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारीगण उन्हें आदर और सम्मान देते हैं। विद्यार्थी जीवन से जुड़ी उन्होंने एक घटना बताई। एक दिन आशीष ने अपने विभाग के सामने सायकल रखी और जब लौट कर आए, तो वह जगह पर नहीं थी। वे पैदल घर आ गये, मगर मन में डर था कि पिताजी बैंक से लौटकर डाँटेंगे। मगर उन्होंने अगले दिन एक नई सायकल ला दी, तो वे बहुत खुश हुए। संत बेटे की वह यादगार सायकल संवेदनशील पिता ने आज भी संभाल कर रखी है। पिताजी ने एक बात और बताई कि वे बहुत सरल मन के हैं। तुलसीदास जी ने उचित ही लिखा है, ''संत हृदय नवनीत समाना'' और इसीलिए ''गावत संतत संभु भवानी।''

मैंने पूछा बचपन में, विद्यार्थी जीवन में क्या उनका कोई अध्यात्मिक झुकाव था, जिससे आपको लगा हो कि वे सन्यासी जीवन चुनेंगे। ''नहीं। ऐसा कुछ भी नहीं था। मैंने ही उन्हें इस ओर प्रेरित किया। प्रतापगढ़ यू पी के हमारे सरयूपारी ब्राम्हण परिवार में आध्यात्मिक वातावरण था। मेरे पिताजी श्री यज्ञनारायण जी रेल्वे अधिकारी होने के साथ ज्योतिष के अच्छे जानकार थे। मैं मिशन की गतिविधियों से जुड़ा था। आशीष के इस निर्णय में श्री रामकिंकर जी के प्रवचनों का विशेष योगदान रहा।'' लखनऊ के मोतीमहल लॉन में रामकिंकर जी को सुनने जाते समय वे साथ में आशीष को भी ले जाते थे। एक दिन पिताजी ने कहा ''वेद–वेदान्त का अध्ययन करों, तुम जो भी काम करोगे उसमें यह ज्ञान काम आएगा''। तब तक बी ए का रिजल्ट भी नहीं आया था और आशीष ने 18 नवंबर 1998 को चिन्मय मिशन में ब्रह्मचारी का तीन साल का कोर्स जॉइन कर लिया। सिद्धबाडी, हिमाचल प्रदेश में स्वामी सुबोधानंद जी और स्वामी अद्वैतानंद जी ने शिक्षा दी। 8 मई 2001 को स्वामी तेजोमयानंद जी ने ब्रम्हचारी दीक्षा दी, जो उस समय चिन्मय मिशन के विश्वप्रमुख थे और उन्हे कैशवचैतन्य नाम मिला। कोर्स पूरा होने पर 1 महीने की छुट्टी मिली साथ ही इन्दौर आश्रम में पोस्टिंग। मिशन की तरफ से कोई बंधन नहीं था। छुट्टी पूरी होने पर उन्होंने अपना निर्णय सुनाया, ''इतने ज्ञान के बाद अब मुझे सांसारिक झंझटो में नहीं उलझना है'' और इन्दौर आ गए। पिताजी को तो उनके इस निर्णय का अन्दाज था, मगर माँ तो माँ होती है। वे बहुत दुखी हुईं।

पिताजी ने बताया आशीष बचपन में अपने चाचाजी सतीशचन्द्र से बहुत प्रभावित थे और अपनी सब बातें उनसे साँझा करते थे। 1 मार्च 2014 को जब उनके निधन की खबर स्वामी जी को मिली, तब इन्दौर में स्वामी तेजोमयानंद जी महाराज का कार्यक्रम चल रहा था। वे विचलित हो गए। आँखों में आँसू आ गए। अपने मन की इस दशा पर उन्होंने स्वामी जी महाराज से पूछा, ''इतना ज्ञान होने पर भी मन की यह दशा क्यों?'' वरिष्ठ और अनुभवी महाराज जी का उत्तर था ''संत होना यानी संवेदनहीन होना नहीं है।'' उन्हें समाधान हो गया और मेरी भी समझ में आ गया, कि स्वामीजी का बाम्बे हास्पिटल किसी को देखने जाना और प्रोफेसर महेश दुबे के घर उनकी तबीयत पूछने जाना उसी संवेदनशीलता के उदाहरण हैं।

❁❁